International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय किसान की लोमहर्षक त्रासदी- "गोदान"

कुमारी ममता सिंह[1], डॉ. ममता रानी[2]

[1]शोधकर्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ,भारत
[2]शोध निर्देशिका, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ,भारत

सारांश

प्रेमचंद सम्पूर्ण मानव जाति का मंगल- कल्याण चाहने वाले मानवतावादी कलाकार थे | साहित्य के सम्बंध में उनकी मान्यता थी- "अब साहित्य केवल मन-बहलाव की चीज़ नहीं है | मनोरंजन के सिवाय उसका और भी कुछ उद्धेश्य है | अब वह केवल नायक-नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता, किंतु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता और उन्हें हल करता है | अपनी इस मान्यता के अनुसार उपन्यासों में विविध चरित्रों के चित्रण के माध्यम से प्रेमचंद ने जीवन की समस्याओं पर विचार किया | प्रेमचंद उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र समझते हैं | भारतीय किसान कैसा होता है, उसे कैसी- कैसी विपत्तियाँ सहन करनी पडती हैं,यह बताने के लिए प्रेमचंद ने "गोदान" में होरी की कल्पना की है और उसके माध्यम से भारतीय किसान की लोमहर्षक जीवन का वर्णन किया है |

बीजक शब्द: भारतीय किसान ,ग्रामीण जीवन, शोषण तथा ऋण की समस्या,

प्रस्तावना

भारत हमेशा से एक कृषि प्रधान देश रहा है | यहाँ की अधिकांश आबादी गाँवों में निवास करती है और इन ग्राम वासियों का प्रधान कार्य कृषि है, इनकी अजीविका का प्रमुक जरिया खेती- किसानी ही है | इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था कहा जाता है | कृषि प्राचीन काल से भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार रही है, इसके प्रारंभिक प्रमाण हमें वेदों में मिलते है | हिंदी साहित्य में भी विभिन्न कालक्रमों में विभिन्न विधाओं में किसान जीवन का चित्रण मिलता है | हिंदी साहित्य में प्रेमचंद पहले लेखक हैं जिन्होने किसानों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की | इसलिए डॉ. रामविलास शर्मा जब प्रेमचंद को अदिव्तीय उपन्यासकार माना इसके पीछे कारण था कि प्रेमचंद ने किसानों के जीवन को भीतर से देखा उनकी पीड़ा, गरीबी, लाचारी और सीधेपन को अपने उपन्यासों में सजीव ढंग से चित्रित किया है

| प्रेमचंद की परंपरा को आगे ले जाने वाले उपन्यासकारों में नागार्जुन, भैरव प्रसाद गुप्ता, फनीश्वर नाथ रेणु, राही मासूम रजा, श्रीलाल शुक्ल, विवेकीराय, भगवानदास मेरवाल, वीरेद्र जैन, राजू शर्मा आदि प्रमुख हैं |

जून,1930 में प्रेमचंद ने "ऑलिवर क्रामवेल" की जीवनी पर एक लेख लिखा | इसमें उन्होंने एक रचनात्मक निरीक्षण करते हुए लिखा है-" ऐसा बहुत कम संयोग हुआ है कि एक शांति-प्रेमी किसान के रोज़ाना हालात विस्तार के साथ लिखे हुए मिल सकते हों या उनमें किस्सों की सी दिलचस्पी और अजब- अनोखी बातें पाया जाती हों |"(विविध प्रसंग,भाग-1,पृ.37 सं.अमृतराय,हंस प्रकासन, इलाहाबाद, 1962)
'गोदान' प्रेमचन्द का चिर अमर कीर्ति स्तम्भ है। यह उनकी प्रौढ़तम कृति है। 'गोदान' में प्रेमचन्द का सम्पूर्ण जीवन-अनुभव सिमट कर केन्द्रीभूत हो गया है। प्रेमचन्द ने अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव में इस ख्यातिपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। प्रेमचन्द ने सन् 1934 में 'गोदान' लिखना प्रारम्भ किया था और सन् 1936 में इसका लेखन पूरा हुआ। दो वर्षों तक एक ही सृजनात्मक मानसिकता में किसी लेखक का रहना भी असम्भव लगता है लेकिन प्रेमचन्द किसानों की त्रासदी से इतने त्रस्त थे कि 'गोदान' में उनकी समस्याओं को उठाया और उनका समाधान ढूँढ़ने की कोशिश की।

यूँ तो प्रेमचन्द किसानों के जीवन के अलग-अलग पहलुओं पर उपन्यास लिख चुके थे - 'प्रेमाश्रम' में बेदखली और इजाफा लगान पर, 'कर्मभूमि' में बढ़ते हुए आर्थिक संकट और किसानों की लगान बंदी की लड़ाई पर - लेकिन 'गोदान' लिखकर उन्होंने किसानों की सम्पूर्ण समस्याओं को मानों उसमें समाहित कर दिया हो। डा. रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'प्रेमचन्द और उनका युग' में लिखते हैं कि-'गोदान' में किसानों के शोषण का रूप ही दूसरा है। यहाँ सीधे-सीधे राय साहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं पहुँचते, लेकिन उसका घर लुट जरूर जाता है। यहाँ अंग्रेजी राज के कचहरी-कानून सीधे-सीधे उसकी ज़मीन छीनने नहीं पहुँचते लेकिन ज़मीन छीन जरूर जाती है। होरी के विरोधी बड़े सतर्क हैं। वे ऐसा काम करने में झिझकते हैं जिससे होरी दस-पाँच को इकट्ठा करके उनका मुकाबला करने को तैयार हो जाए। वह उनके चंगुल में फँसकर तिल-तिल कर मरता है लेकिन समझ नहीं पाता कि यह सब क्यों हो रहा है। वह तकदीर को दोष देकर रह जाता है, समझता है; यह सब भाग्य का खेल है, मनुष्य का इसमें कोई बस नहीं"।

प्रेमचंद के "गोदान" में गांव की प्रकृति और वहां के जन-जीवन के बारे में बड़े ही प्रेम के साथ लिखा गया | गोदान का चित्रण ऐसा है कि उसमें आत्मीयता और तल्लीनता दोनों का बेजोड़ संगम हैं | जो उनके अन्य उपन्यासों में कम ही मिलता है | गोदान में कर्ज और मुनाफे की दुनिया में उन्होंने भेद को प्रकट किया है जो इससे पहले कहीं नहीं मिलता | इसमें एक तरफ ज़मींदारी वर्ग का प्रतिक राय साहब, मिल

मालिक खन्ना, मालती और मेहता जी की दुनिया है और दूसरी ओर होरी, धनिया,गोबर, शोभा, हीरा आदि की दुनिया है | एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है | इन दोनों वर्गो के चित्र प्रेमचंद ने बड़ी ही निपुणता से उकेरे हैं | जिसमें होरी व उसके भाई बंधुओं के लिए उनकी सहृदयता अधिक गहराई तक पहुंच गई है| वहीं दूसरी ओर राय साहब खन्ना- संप्रदाय के उन्होंने अपना व्यंग्य और भी अधिक पैना कर दिया है और उनके मर्म पर अत्यधिक चोट करता हुआ सा दिखाई देता है|

'गोदान' का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। होरी उन तमाम गरीब किसानों की विशेषताएं लिए हुए है जो जमींदारों और महाजनों की धीमे-धीमे लेकिन बिना रूके हुए चलने वाली चक्की में पिसा करते हैं। डा.रामविलास शर्मा इस सन्दर्भ में कहते हैं कि 'गोदान' की गति धीमी है, होरी के जीवन की गति की तरह। यहाँ सैलाब का वेग नहीं है, लहरों के थपेड़े नहीं हैं। यहाँ ऊपर से शांत दिखने वाली नदी भँवरें ही जो भीतर-ही-भीतर मनुष्य को डुबोकर तलहटी से लगा देती हैं और दूसरों को वह तभी दिखाई देता है जब उसकी लाश ऊपर आती हुई बहने लगे।''

होरी के रूप में किसान की दारूण दशा का वर्णन प्रेमचन्द में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। गोदान में सामाजिक-आर्थिक शोषण की कई परते हैं। 'गोदान' उस पूरे तंत्र की वृहद आलोचना प्रस्तुत करता है। दरअसल प्रेमचन्द राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को समाज के वंचित तबकों-किसान, महिला, दलित, मजदूर आदि के हित की दृष्टि से देखते थे। उनकी स्पष्ट समझ थी कि जब तक इन वंचित तबकों का शोषण खत्म कर इन्हें राष्ट्रीय स्वाधीनता की लड़ाई में शामिल नहीं किया जाता तब तक मुकम्मल आज़ादी पाना और बेहतर राष्ट्र बनाना संभव नहीं है। राजनैतिक स्तर पर एक सीमा तक यही काम महात्मा गाँधी ने किया। गाँधी स्वाधीनता आंदोलन को गाँवों और कमज़ोर तबकों तक ले गए। प्रेमचन्द ने यह काम रचनात्मक स्तर पर ज्यादा बारीकी और संवदेनशीलता के साथ किया।

'गोदान' के होरी का जीवन इतना दयनीय है कि वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता। उसकी अनुकूल परिस्थितियाँ भी प्रतिकूल हो गई हैं वह धनिया से कहता है- ''जब दूसरे के पाँवों-तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पाँवों के सहलाने में ही कुशल है।''

रायसाहब जमींदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए किसान की शोषण प्रक्रिया की पोल खोलते है। रायसाहब कहते है- 'मैं इसे स्वीकार करता हूँ कि किसी को भी दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नहीं है। उपजीवी होना घोर लज्जा की बात है। कर्म करना प्राणिमात्र का धर्म है। समाज की ऐसी व्यवस्था, जिसमें कुछ लोग मौज करें और अधिक लेाग पिसे और खपे, कभी सुखद नहीं हो सकते। हम अपने आसामियें

को लूटने के लिए मजबूर हैं।'' रायसाहब ज्ञानवान होते हुए, स्थितियों को समझते हुए विवश है। यह प्रवृत्ति जमींदारों के पास कूट-कूट कर भरी है जो अपनी व्यवहार कुशलता से किसानों को मूर्ख बनाते हैं। जमीन उनकी श्रम और संघर्ष किसान का। गोदान का होरी मानता भी है कि हमारा जन्म इसीलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएँ और बड़ों का घर भरें।

भारतीय किसान इस जमींदारी कुव्यवस्था में निरन्तर पिसता रहता है और अपने को बैल स्वीकार करता है और जुतता चलता है। गोदान का होरी यह स्वीकार भी करता है और कहता है- ''हम लोग तो बैल हैं और जुतने के लिए पैदा हुए हैं।''
प्रेमचन्द महाजनी सभ्यता के शोषण का अनुभव कर चुके थे। 'गोदान' में उन्होंने इनके शोषण के तरीकों को चित्रित किया है।

सामंतवाद शोषण को आत्मसात करने की व्यवस्था है। आज भी जहाँ सामंतवाद के अवशेष बचे हैं वहाँ आत्महत्याएँ कम हैं। पूँजीवादी होड़ में हार से निराश मानस आत्महत्या की तरफ बढ़ता है। आज के समय में किसानों को बस दो रोटी के बारे में नहीं सोचना। बच्चों की खर्चीली शिक्षा और मँहगी शादी के बारे में सोचना है। खेती घाटे का सौदा बन चुकी है। आज़ादी के बाद खेती की चिंता का दायित्व 'जनतांत्रिक सरकार' को उठाना था और किसानों की मदद करनी थी लेकिन सरकार को अपना वोट बैंक बढ़ाना है तो वह चुनाव के समय वायदों तक सीमित रह जाती है और जीत दर्ज करने के बाद लाटरी के रूप में कर्ज माफी कर देती है, मरे किसान को मुआवजा दे देती जो किसानों की समस्या का स्थायी उपाय नहीं है वह मात्र बहकावा है। किसानों को अपने सहानुभूति जाल में फँसाने का। प्रेमचन्द का होरी किसान जानता था कि उसका सिर जमींदारों के पैरों तले दबा है। वह उसे अपनी नियति अैर भाग्य मान लेता है लेकिन आज का किसान थोड़ा शिक्षित हो गया है, उसे सरकार के खोखले वादों का पता है जिसका जीता-जागता उदाहरण है, जंतर-मंतर पर किसानों का विरोध-प्रदर्शन, मध्य प्रदेश किसानों का विरोध आंदोलन और उसकी लहर अन्य राज्यों तक फैलना। यह सब आज के किसान की जागरूकता का परिणाम है लेकिन फिर भी प्रेमचन्द के होरी की तरह आज का किसान धैर्यवान व सन्तोषी नहीं है जिस कारण से वह आत्महत्या की तरफ विवश होता है।

'गोदान' के होरी की महत्वपूर्ण बात यह है कि वह जीवन-पर्यन्त संघर्ष करता है। वह हारता नहीं है उसमें जिजीविषा बेजोड़ है, वह धनिया से कहता है- ''तो क्या तू समझती है, मैं बूढ़ा हो गया? अभी तो चालीस भी नहीं हुए। मर्द साठे पर पाठे होते है।'' होरी की यह जिजीविषा उसे स्फूर्ति और जोश प्रदान करती

है, जीवन में संघर्ष व श्रम करने की। प्रेमचन्द का नायक होरी ही ऐसी अदम्य जिजीविषा रख सकता है मृत्यु के अलावा उसके जीवन-संग्राम का कोई अन्त नहीं कर सकता और मृत्यु भी ऐसी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। डा. इन्द्रनाथ मदान इस सन्दर्भ में लिखते हैं-''होरी ऋण के बोझ से बुरी तरह दबा हुआ है। जीविका चलाने के लिए वह तीन साहूकारों से रूपया उधार लेने पर विवश हो जाता है। ऋण दिन-पर-दिन बढ़ता चला जाता है। ऋण चुकाने और मितव्ययिता से दिन काटने के लिए वह अपनी शक्ति से भी अधिक काम करता है। बहुत दिनों तक अधभूखा रहने के बाद एक दिन वह सड़क पर गिर पड़ता है और उसकी जीवनलीला समाप्त हो जाती है।'' बावजूद इसके क्रूरता तब होती है जब रूपया माँगने वाले उसके पास आ धमक पड़ते हैं और उसकी पत्नी धनिया रोती-बिलखती हुई घर में रखे बीस आने ब्राह्मण के पवित्र हाथों पर रखती हुई कहती है- ''महाराज, घर में न गाय है न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका 'गोदान' है।''

भरतीय किसान की जीविका का साधन है खेती, जिसका मूल आधार है गाय और उससे पैदा हुए बैल | गाय उसकी सम्पत्ति भी है, मर्यादा तथा प्रतिष्ठा का चिह्न भी तथा उसकी पूज्य गो माता भी है | जिसके दर्शन से पाप-ताप नष्ट हो जाते है | "गोदान" की सारी कथा का केंद्र भी गाय है और उसका नामकरण भी गाय के आधार पर किया गया है | गाय खरीदकर द्वार पर बांधने की लालसा के कारण ही होरी पर एक के बाद एक अपदाएं आती है | गाय की रोज दर्शन करने की उसकी लालसा अधूरी रह जाती है और मरी गाय का अभिशाप उसके गले की कठोर लौह श्रृंखला बनकर उसका दम घोंट देता है |

होरी थानेदार को रिश्वत देने के लिए जो ऋन लेता है, वह जीवन भर नहीं चुका पाता और धीरे-धीरे खेतिहर किसान से मात्र मजदूर बनकर रह जाता है | महतो कहलाने की आकांक्षा भी विषम परिस्थितियों के कारण मन ही मन रह जाती है- न द्वार पर गाय रहती है ,न खेत करने के लिए बैल और न पसल उगाने के लिए अपना खेत. ऋण चुकाने के लिए वह भूखा-प्यासा दिन रात मेहनत करता है और एक दिन अधभूखा रने के कारण सड़क पर गिर पड़ता है ओर उसकी मृत्यु होजाती है |

"गोदान" का नायक होरी एक साधारण व्यक्ति है, मामुलि किसान है | आरंभ में उसमें आत्मविश्वास भी है, विषम परिस्थियों में जूझने का जीवट भी है, पराजय पर पराजय होते हुए भी वह हिम्मत नहीं हारता, हर पराजय उसे शक्ति देती है लेकिन अंत में आर्थिक बोझ के कारण उसकी कमर टूट जाती है | और होरी अपनी जीवन की लड़ाई हार जाता है |

निष्कर्ष

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की जनता करीब-करीब 60-70 प्रतिशत प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। इस कारण से प्रेमचन्द के कृषक-समस्या सम्बन्धी 'गोदान' कृति का विश्लेषण समय की जरूरत है। जंतर-मंतर पर किसानों का प्रदर्शन, मध्य प्रदेश में बेकसूर किसानों पर गोलीबारी, किसानों की आत्महत्या, भूखमरी, यह सब किसानों की त्रासदी बयान करता है। जो समस्याएं प्रेमचन्द के युग में थी वे समस्याऐं आज भी भारतीय किसानों को त्रस्त करती हैं। प्रेमचन्द का 'गोदान' उपन्यास किसानों की इसी त्रासदी की महागाथा है जो युगों-युगों तक चीखती-चिल्लाती किसानों की समस्याओं को उजागर करती रहेगी।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचन्द और उनका युग - डा॰ रामविलास शर्मा, पेज नं॰ - 97
2. एम.एच.डी-3 - इग्नू -पाठ्यक्रम
3. गोदान - उपन्यास -प्रेमचन्द, वाणी प्रकाशन,
4. त्रैमासिक ई-पत्रिका- अपनी माटी